अन्तरा-शब्दशक्ति

समय का पहिया

काव्य संग्रह

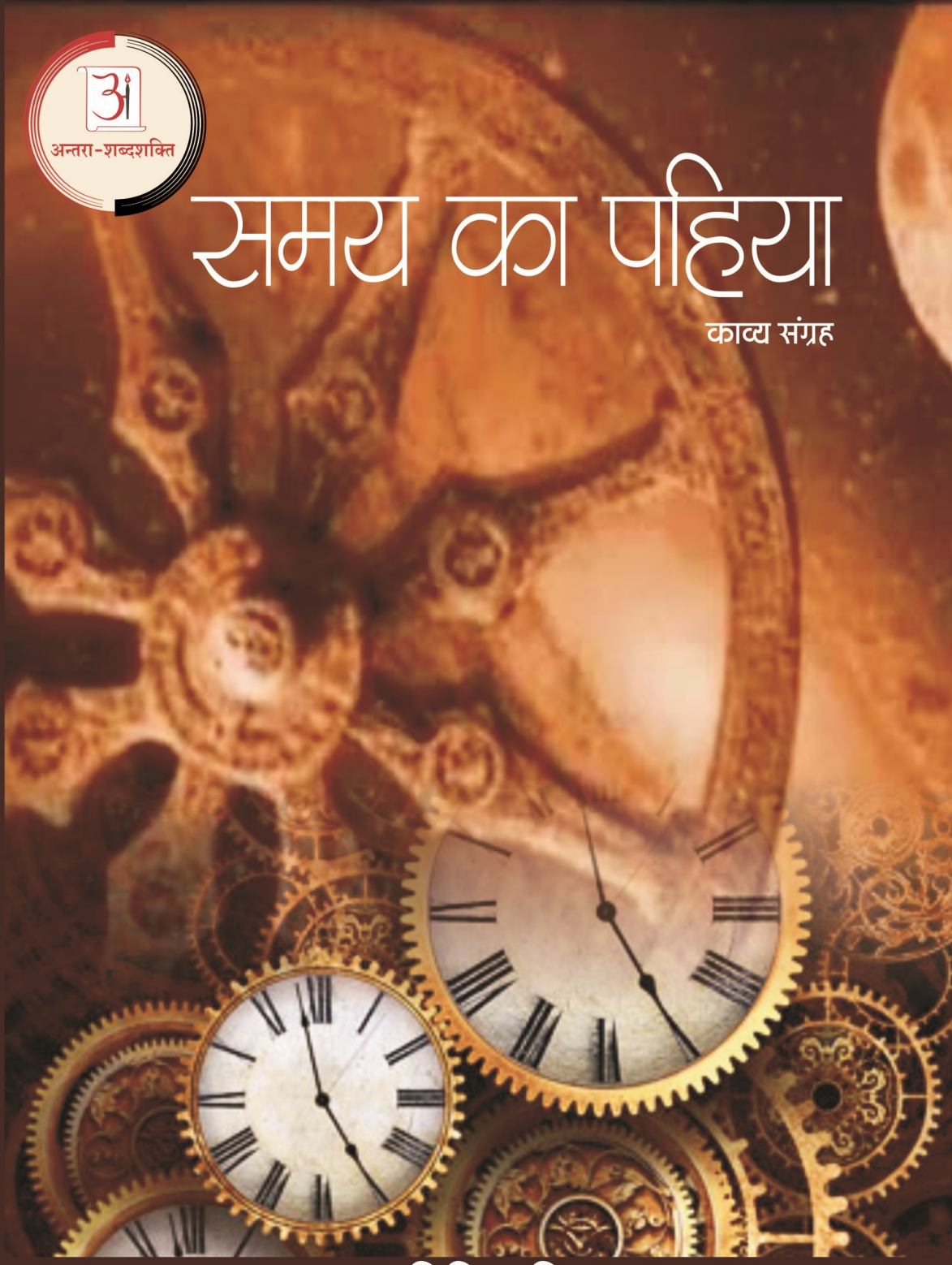

अदिति रुसिया

समय का पहिया

(काव्य संग्रह)

अदिति रुसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-029-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- अदिति रुसिया
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
SAMAY KA PAHIA BY ADITI RUSIA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	समय का पहिया	5
1.	छल	7
2.	फ़र्क़	8
3.	नज़रिया	9
4.	ममता	10
5.	निरंतर	11
6.	वात्सल्य	12
7.	गुलाब	13
8.	पाषाण	14
9.	दुश्मन	15
10.	शिकवा	16
11.	उजाला	17
12.	रोशनी	18
13.	हेरा फेरी	19
14.	रात	20
15.	समर	21
16.	अभिनंदन	22
17.	खट्टा मीठा	23

18. प्रतिशोध 24
19. ताना बाना 25
20. अंतस 26
21. मानव के अंतर्मन की गाथा 27
22. उतार चढ़ाव 28
23. प्यास 29
24. चोरी-चोरी 30
25. देवरानी रीना को समर्पित चंद पंक्तियाँ 31
26. गति 32

समय का पहिया

ये शीर्षक मैंने इसलिए दिया अपनी किताब का क्योंकि समय बहुत बलवान है। हम समय के पीछे भागते है पर उसके साथ चलना नहीं सीख पाए हैं। मेरी किताब समय का पहिया मेरी सातवीं किताब है। कितना अच्छा लगता है ये सोच कर ही की अभी कुछ ही दिन हुए हैं मुझे लिखते हुए और मेरी सातवीं किताब छप रही है। अभी कुछ ही समय पूर्व मैं अंतरा से जुड़ी और बहुत कुछ सीखने मिला मुझे। प्रीति, ब्रजेश जी, पिंकी जी का सानिध्य मिला। इन सबसे कुछ न कुछ सीखा ही है मैंने। समय के साथ साथ मेरी लेखनी में बहुत सुधार आया है। आज जब मैं किसी रचना को पढ़ती हूँ तो मुझे ख़ुद विश्वास नहीं होता कि ये मेरी लिखी हैं। पर अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है। आज जो कुछ भी निखार मेरी रचनाओं में आया है कहीं न कहीं प्रीति और संजय जी के मार्गदर्शन का ही परिणाम हैं। क्योंकि जब मैं लिखती हूँ उसे संजय जी सुनते हैं मेरी त्रुटियों को सुधारने में मेरी बहुत मदद करते हैं मेरा भावप्रवण उनकी ही वजह से अच्छा हुआ है और प्रीति की वजह से मैंने कई विधाएँ सीखीं हैं जिनका मुझे ज्ञान भी नहीं था। प्रीति और संजय जी के बिना मेरा लेखन अधूरा है। दोनों ही मेरे प्रेरणास्रोत हैं।प्रीति से अभी बहुत कुछ सीखना बाक़ी है। समय का पहिया अपनी गति से चलता रहेगा हमें उसके चलना है। मेरी सारी रचनाएँ इसी पर आधारित है। वक़्त कभी न किसी के लिए रुका है न रुकेगा। आज समय काफ़ी बदल चुका है। जाने फिर भी हम इस बात को क्यों नहीं मानते आज भी कई लोग ऐसे हैं जो बेटी के जन्म पर ख़ुश नहीं होते उसे मरने के लिए छोड़ देते हैं या कोख में ही मार देते हैं

आज भी ये नहीं समझ पा रहे कि बेटे बेटी में कोई भेद नहीं। समय के साथ जीवन में बदलाव अति आवश्यक है। मैंने अपनी कविताओं में कुछ खट्टी कुछ मीठी यादों को लिखा है। हर परिस्थिति हर हाल में समय के साथ ख़ुश रहना सीखा है। मैं यही चाहती हूँ कि हर इंसान को अच्छा बुरा चाहे जैसा भी वक़्त आए अपनी ज़िंदगी ख़ुशमिज़ाजी से जीना चाहिए। हर हाल में ख़ुश रहना एक बड़ी चुनौती होती है जिसे बड़ी सहजता से अपना कर दूसरों के चेहरे पर भी मुस्कान लाना सीखना चाहिए।

स्वतंत्र लेखिका

अदिति रूसिया

छल

ये जीवन एक छलावा है
इसमें न किसी का बस चल पाया है
जीवन से मृत्यु तक हर दम
बस इम्तिहान हैं देते हम

जो जीत गया वो सिकंदर है
जो हार गया वो तक़दीर का मारा है
इस जीवन में धोखे भी बहुत मिलते
कई अच्छे रिश्ते भी हमको मिलते

झूठ फ़रेब से न कोई दोस्ती चलती
अच्छी दोस्ती क़िस्मत से मिलती
इस जीवन का कोई न भरोसा
आज हैं कल का किसको पता

जितना पुण्य धर्म करना है क़र ले
भगवान को तू मानव भजले
यही पुण्य धर्म आड़े आएगा
जब भी मुसीबत में ख़ुद को पाएगा

जीवन का कोई भरोसा नहीं
कब अंतिम क्षण तेरा आएगा
हँस कर ख़ुश होकर जी ले जीवन सारा
फिर न मिलेगा ये जीवन दोबारा

न किसी से आस लगा नहीं तो
धोखा ही पाएगा इस जीवन में
जी ले बन्दे हर लम्हा तू अपना
अंत समय हाथ मलता रह जाएगा

कौड़ी कौड़ी न माया जोड़ रे मानव
जब तू इस संसार से जाएगा
सब यहीं का यहीं धरा रह जाएगा
साथ तेरे न कुछ भी जाएगा

फ़र्क़

हाँ!
तुम वैसे ही हो
जैसा मैंने अपने ख़्वाबों में
चाहा था हसफ़र
बिल्कुल वैसे ही
जो मेरी हर ख़ुशी में ख़ुश हो
पलकों पे बिठा कर रखे
मेरे लिए आसमान से तारे भी
तोड़ने पड़े तो ले आए
चाँद भी धरती पर उतार लाए
हाँ!
तुम वैसे ही हो
मेरी हर आशा को पूरा किया
तुमने
न कभी कोई बात मेरी टाली है
मेरी नाराज़गी पर भी तुम मौन रहे
न कभी कोई फ़र्क़ दिखा तुम्हारे
व्यवहार में
हर दुःख दर्द में मेरे साथ खड़े रहे
चाहे मेरे दुःख हो या माँ पापा के
बिना किसी चिड़चिड़ाहट के
हर दर्द को समझा तुमने
तुम प्यार का वो सागर हो
जो सिर्फ़ दूसरों को ख़ुशियाँ
लुटाता है
किसी से लेता कुछ नहीं
सिर्फ़ देना जानता है
उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता
क्या खोया क्या पाया है
तुम बिल्कुल वैसे ही हो
किसी बात का तुम पर असर नहीं
होता हर हाल में
हर पल में तुम सिर्फ़ मुस्कुराते हो
कभी अपने दुःख भी नहीं बताते
हो
माथे पर कभी शिकन भी नहीं
आती
हर दुःख भी ख़ुशी में बदल देते हो
हाँ तुम बिल्कुल वैसे हो
जैसा मैंने चाहा
वैसे ही हँसमुख ख़ुश मिज़ाज

नज़रिया

अपना अपना नज़रिया है लोगों का देखने का
किसी को आधा गिलास भरा
तो किसी को आधा ख़ाली दिखाई देता है
ये तो लोगों की सोच है जो बदली नहीं जा सकती
छींटा कशी करने से लोग बाज़ नहीं आते
अपने घर में कम दूसरों के घर झाँकते ज़्यादा नज़र आते
अरे यहाँ अपनी तो संभलती नहीं दूसरों की क्या सम्भालोगे
जो ऊँगली तुम दूसरों पे उठाते हो वो कल तुम पर ही उठेगी
सोच बदलो दुनियाँ बदलेगी
बस थोड़ा नज़रिया बदल के देखो
दुनियाँ गोल थी गोल ही है
तुम बदले हो ज़माना वहीं का वहीं है
बस सोच बदली है तुम्हारी
थोड़ा तुम बदलो ज़माना ख़ुद बदला नज़र आएगा
थोड़ा प्यार बाँटों मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाओ
हज़ार हाथ आगे आएँगे तुम्हारे लिए
प्यार का दरिया भी बहाएँगे तुम्हारे लिए
ज़रा दूसरों के लिए मिट के तो देखो
हज़ारों लोग मर मिटेंगे तुम्हारे लिए

ममता

माँ ममता की मूरत होती
कभी सुलाती लोरियाँ सुना
तो कभी सुलाती कहानियाँ परियों की सुना
कभी लुटाती प्यार
तो कभी ग़ुस्सा भी दिखाती
कभी पापा की डाँट से बचाती
तो कभी ख़ुद हमारी ख़ातिर डाँट खाती
कभी बनाती मालपुए
तो कभी खिलाती खीर पुरी
सबका ध्यान रखती है माँ
पर ख़ुद का ध्यान न रख पाती है
माँ मेरी है प्यारी प्यारी
मेरी हर बात जान जाती है
स्वयं पहनती पुराने
पर नए नए कपड़े भी हमको
हर दीवाली दिलाती है
पापा से कह कह कर
हर इच्छा पूरी कराती है
जब भी हम बीमार होते करती ख़ूब तिमारदारी
अपना न ध्यान रखती करती सेवा ख़ूब हमारी

निरंतर

समय का पहिया
निरंतर चलता जाए
चार दिन की जिंदगानी है बंदे
अच्छे कर्म तू करता जा
जाने कौन घड़ी में
तुझको मौत आ जाए
यमदूत पकड़ तुझे ले जाए
सद्गति चाहिए यदि
तुझको भवपार उतरना है गर तुझको
हरि का नाम तू लेता जा
सत्कर्म तू बस करता जा
अच्छे बुरे की न सोच तू
जग में भलाई करता जा
समय न रुका है न रुकेगा कभी तेरे लिए
कुछ ऐसा न कर
कि पीछे हाथ मलता रह जाए
जग में भलाई करता जा
हरि का नाम लेते जा
समय का पहिया
निरंतर चलता जाए
ख़ुशियों के फूल बिखेरते जा

वात्सल्य

माँ से बंधी है वात्सल्य की डोर
पिता से बंधी संस्कारों की डोर

माँ सिखाती हर हाल में ख़ुश रहना
पिता सिखाते जीवन में न हार मानना

माँ से हर बात कह जाते हैं
पिता बिन कहे पूरी कर जाते हैं

माँ घर के काम काज सिखाती
पिता दुनियादारी की बातें सिखाते

माँ के दुलारे होते बेटे
पिता के दिल के क़रीब होती बेटियाँ

माँ रोती है विदाई में बेटी की
पर पिता सबसे ज़्यादा रोते हैं

माँ की सिखाई हर बात सरल होती
पिता की राह कठिन ज़रूर पर सच्ची होती

गुलाब

सच कहूँ
तुम भी न बिल्कुल
गुलाब की तरह ही वो
जैसे
गुलाब काँटों से घिरा होता है
फिर भी सारी बगिया को
महकाता रहता है
काँटों के बीच
रहकर भी
ख़ुश रहता है
अपनी नाज़ुक कोमल सी
पंख़ुरियो के संग
ख़ुश हो लेता है
वैसे ही
तुम भी
हर वक़्त मुस्काते रहते हो
हर परिस्थिति में
तुम सिर्फ़ ख़ुश रहते हो
काँटे रूपी
कठिन वक़्त में भी
तुम
हाँ तुम ही
अपनी छोटी सी बगिया के
तुम वो
गुलाब हो
जो अपने परिवार के
साथ हिल मिल
ख़ुश हो लेते हो

तुम्हारी मुस्कुराहट से ही तो
हमारी बगिया महकाती है
जिसे देख
हमें भी संबल मिलता
हम भी हर ग़म हँस कर सह
जाते हैं
तुम यूँ ही मुस्कुराते रहना
हमारी बगिया
अपनी मुस्कान से सदा
बगिया में ख़ुशबू
बिखेरते रहना

पाषाण

दुःख इतने झेल लिए
दर्द बहुत सह लिए
बन गया तन पाषाण सा
अब न दर्द होता महसूस
न होता किसी बात से दुःख
न किसी से गिले रखे
न शिकवे हमने
हाँ
पर इतने भी पत्थर दिल नहीं
कि
न करें किसी के जज़्बातों की क़दर
तन मन कठोर किया है अपना
पर दिल अभी भी है फूल सा कोमल
चोट मुझको भी लगती है
जब देता ज़ख़्म कोई अपना
दुखता बहुत है ये
जब रोता कोई है अपना
क़द्र जज़्बातों की करते हैं हम भी
करते रहेंगे ताउम्र
पत्थर का भी दिल होता
तभी पत्थर से ही निकलते हैं कई सोते,..!

शिकवा

न शिकवे है न शिकायत है तुमसे कोई
ज़िंदगी की राहों में न रुकावट है कोई

प्यार किया है तुमसे बहुत हमने मेरे दिलबर
करते हैं करते रहेंगे तमाम उम्र मेरे रहगुज़र

आशिक़ी इतनी सस्ती भी नहीं मेरी
जितनी तुमने समझी है यार मेरी

हम तो वो गुलाब हैं जो काँटों में खिलता है
जिसकी ख़ुशबू से सारा गुलिस्ताँ महकता है

दुख भी लाखों झेले हैं हमने कभी
मुँह से उफ़ तक न निकली है हमारे कभी

क्या करें और क्यों करे शिकायत किसी से
जबकि मालूम है कुछ न मिला है हमें इस ज़माने से

साथ तेरा पाया है जबसे मैंने हमसफ़र
हर दिन मेरा होली रात दिवाली है

दुश्मन

यारी तो ख़ूब निभाई हमने
दुश्मनी देखी कहाँ तुमने

अपनों से ज़्यादा दोस्त बनाए हमने
दोस्तों को अपना बनाया हमने

अपनों की नफ़रतें ख़ूब देखी हमने
दोस्तों से प्यार भी ख़ूब पाया हमने

भरी महफ़िल में किसी अपने ने रुलाया हमको
वहीं किसी दोस्त ने गले से लगाया हमको

ज़िंदगी जी है ज़िंदादिली से हमने
तमाम उम्र गुज़ार दी तेरे प्यार में हमने

पाकर तेरा साथ मिल गई मंज़िल हमें
अब न कोई हसरत बची है मेरे दिल में

उजाला

उलझन में था मन मेरा
चारों ओर था अंधेरा
उदासी बहुत छाई थी,
पर राह न कोई पास थी

लिखने को था बहुत कुछ
लिखा भी था बहुत कुछ
उदास मन कुछ करना चाहता था
पर राह न कोई पास थी

जीवन साथी का साथ था
हाथों में मेरे उनका हाथ था
ख़ुशियाँ ढेरों साथ थी
पर राह नहीं कोई पास थी

मन के भाव उछल कूद मचाते थे
लिखने को मेरे हाथ बहुत कुछ
आतुर थे
रोशनी की किरण दिखाई प्रीति ने
अब राह मेरे फिर पास थी
मन के भावों को मैंने ख़ूब उकेरा
लिख लिख काग़ज़ पर
मिला मुझे फिर नया सबेरा राहों
पर,
अब राह फिर मेरे पास थी

रोशन किया संजय ने जी ने मेरा
जीवन की धूप छांव नाम छपवा
कर
कर दिया जीवन में उजियारा
अब राह फिर मेरे पास थी

बढ़ती गई यूँ ही ज़िंदगी मेरी
अब मक़सद था पास मेरे
हर ग़म में हर उलझन में जीने का
क्योंकि अब राह फिर मेरे पास थी

लेखनी में आया निखार
बाहर आया दबा ग़ुबार
कुछ प्रेम की पाती लिखी लिखे
मनों भाव,
क्योंकि अब राह फिर मेरे पास थी

रोशनी

हे कृष्ण !
जब से तुम्हारी
शरण आई हूँ
जीवन को मेरे
एक दिशा मिल गई

हे कृष्ण !
जबसे मैंने तुम्हारी
राह पर चलना शुरू किया
मुझे मन की
शांति मिल गई

हे कृष्ण!
जब जब मैंने तेरा
नाम लिया है
मेरे सारे विघ्न
एक पल में मिट गए

हे कृष्ण !
जब से मैंने तेरा
साथ पाया
मेरे जीवन में
आया एक उजाला

हे कृष्ण !
जब भी मैंने
तुझे दिल से पुकारा
हमेशा तुझे
अपने साथ पाया

हे कृष्ण !
जब से मेरी नजरें
तुझसे मिली
मैं मैं न रही
तेरी दीवानी हो गई

हे कृष्ण !
जबसे तेरी भक्ति मिली
मुझको एक शक्ति मिली
मिला अटूट विश्वास
मिली जीवन जीने की आस

हेरा फेरी

क्या मिलेगा बंदे इस हेरा फेरी से
क्या पाया क्या खोया हेरा फेरी से
दुनिया में आया है ख़ाली हाथ
जाना तुझको है ख़ाली ही हाथ

जग में आया है कर ले अच्छे काम
रोशन हो जाएगा तेरा जग में नाम
न मिला है कभी किसी को सुख
देकर के किसी को जग में दुःख

नेक कमाई कर ले बंदे हरि नाम ले
सद्गति मिल जाए तुझको हरि नाम ले
निंदा चुग़ली छोड़ दे शरण प्रभु की ले
हँसते हँसते निकले दम हरि नाम तू ले

भवसागर से पार है जाना तुझको
मीठे बोल बोलने होंगे तुझको
हेरा फेरी करना है तो मन की हेरा फेरी कर
दीन दुनियाँ से हटा मन प्रभु नाम तू जपा कर

रात

कृष्ण राधा की
रासलीला देखने
निधि वन आए
गोप गवाल सारे
आए शिव भी
भेष बदल गौरा संग
उस रात क्या ख़ूब
दिखा नज़ारा
सारी लता पता ने
रूप धरा
गोप ग़ोपियन का
अनोखा
रासलीला को आए देखने
देवता सब अंबर से धरती पर
समा बँधा था ख़ूब
बज रहे थे राधा के नुपूर
संग छिड़ी थी कान्हा की
बँसुरी की तान मधुर
रम गए शिव इतने
भूल गए धर आए हैं
वेष गोपी का
उठा मुखड़े से जब घूँघट
शर्मोंसार हुए फिर शिव
कान्हा मुस्क़ाए मंद मंद
बोले न लजाओ भगवन
हमें था मालूम
संग गौरा के आएँ हैं शिव
आपके आगमन से
बना ये महारास
रंग जमाया आपने
आनंदित हुआ आज मन
नाच रहे वन में मयूर
खिल उठे वन उपवन
कर रहे वर्षा पुष्पों की
सारे देवगण

समर

आज संकट जब छाया भारत पर
तुमने बजरंगी फिर कमाल किया

मंगल का दिन चुन कर तुमने
फिर पाक पे ऐसा वार किया

त्रेता में तुमने रावण की जलाई लंका
कलयुग में फिर से पाक को ख़ाक किया

जय जय जय बजरंगी वीर हनुमान
तारो हम सबको भगवान

आज बहुत ख़ुश हैं फिर से राम
इस समर में तुमने जो दिखाया है कमाल

अभिनंदन

अभिनंदन का अभिनंदन
करता है सारा देश आज
ख़ुश है सारी धरती अंबर
देवता करते ख़ुश हो
फूलों की बरसात
अभिनंदन तुमसा वीर
कमांडर पा ख़ुश है
भारत माता आज
तुम जैसे वीर सिपाही के लिए
सारे देशवासियों ने
करी प्रार्थना
किया सभी ने मिल
महामृतुंजय का जाप
सबकी दुवाओं ने कमाल किया
बाल न बाँका हुआ तुम्हारा
जीत हुई हम सबकी आज
जो कल तक ग़म में डूबे थे
देश के कोने कोने में जन जन
ख़ुशी की लहर
दौड़ी है सबके सीने में आज
कल की रात काली थी आई
चैन की नींद सोऐगा
सारा संसार आज
अभिनंदन का अभिनंदन
करता है सारा देश आज
कल की भोर
बड़ी सुखद होगी
कल सूरज की किरणें भी
होंगी कुछ ख़ास
भोर के होते ही
अभिनंदन के अभिनंदन के लिए
होंगी बिछी लाखों की आँखे
वो दृश्य होगा बहुत ही अद्भुत
जब प्रवेश करेगा
प्यारा अभिनंदन
अपने देश की सीमा पर
ख़ुशियों से नम
होंगी सबकी आँखे
सारे देश में गूंजेंगे
अभिनंदन तेरे ही जय कारे
तुमसा वीर कमांडर पा
ख़ुश हैं आज चाँद तारे
अभिनंदन का अभिनंदन
करता है सारा देश आज,..!

खट्टा-मीठा

कुछ खट्टी मीठी यादें
साँझा करने आई हूँ
कुछ नई नई कुछ पुरानी यादें
साँझा करने आई हूँ
समय बीता बहुत जब छोटी थी
रहती थी नानी के घर
ख़ूब सेवा कराती थी
छः छः मौसियों का
प्यार दुलार पाया ख़ूब
मामा की भी प्यारी थी
नानी की राज दुलारी थी
अमरूद की टहनी पर चढ़कर
खाए ख़ूब अमरूद हमने
नाजों से पल कर बड़ी हुई
पापा की तो जान
बसती थी मुझमें
समय का पहिया चलता चला
तेज़ी से समय था भाग रहा
पापा की मून बड़ी हो गई
माँ ने सदा सच की राह दिखाई
जिससे मैं माँ की परछाईं कहलाई
आया समय विदाई का
फूट फूट कर पापा रोए
रोई माँ भी ख़ूब
सजधज कर संग लिए अरमान
किया था मैंने जब गृहप्रवेश
डर भी था मन में ख़ूब
पर दूर हुआ सारा डर मन का
पाकर संजय जी का साथ
मिली एक प्यारी सासु जी
जिसने दिया माँ सा प्यार
कभी लगा ही नहीं ससुराल में हूँ
लड़कपन बहुत भरा था मुझमें
प्यारे प्यारे देवर थे
खेला करती थी संग उनके मैं
काम जल्दी जल्दी करती
फिर जुट जाती कभी लुका छुपी
तो कभी कैरम खेलने में
आज याद आती हैं जब वो बातें
मुस्कान छा जाती चेहरे पे
सुख दुःख देखे बहुत
जीवन में आए कई उतार चढ़ाव
सब कुछ हँस कर बिता दिया
हर लम्हा ख़ुश हो कर जिया
हाथों में हाथ जो था इनका
मुश्किल में भी जीना सिखाया,..!

प्रतिशोध

तुमसे क्या प्रतिशोध लूँ मैं
जी न पाऊँ एक पल तुम बिन मैं
किस लिए प्रतिशोध लूँ मैं
ये भी न जानूँ मैं
जीवन बँधा है तुमसे मेरा
हर साँस है जुड़ी तुमसे मेरी
प्रतिशोध ले तुमसे फिर
कहाँ जाऊँ बताओ मैं
आता है कभी कभी ग़ुस्सा
ख़ुद पे भी मुझे
क्या बनी हूँ मैं सिर्फ़
सबके काम करने के लिए
क्या मेरा ख़ुद का
कोई वजूद नहीं
क्या ज़िंदगी मेरी मेरी नहीं
भर जाती हूँ
आक्रोश से तब
जब थक कर
चूर हो जाती हूँ
सोचती हूँ फिर बैठ
क्यों जियूँ दूसरों के लिए
अब जीना है मुझे
ख़ुद के लिए
भर जाती हैं तब
आँखें मेरी
कितनी स्वार्थी हो जाती हूँ मैं
एक पल के लिए
पर कमज़ोर नहीं पड़ती
डगमगाती नहीं
अपने आँसू पोंछ
फिर से काम में लग जाती हूँ मैं
क्या करूँ
बँधी जो जीवन की डोर तुमसे
मुस्कुरा कर फिर जी उठती हूँ
सिर्फ़ तुम्हारे लिए मैं

ताना-बाना

ये जीवन है
ताना बाना बुनता रहता
रोज सुबह उठते ही
उठते है मन में कई विचार
कुछ अच्छे कुछ बुरे होते हैं
ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं
अभी अच्छे हैं
फिर जाने एक पल में
क्या किसको हो जाए
सपने संजोते हैं
बुनते हैं सपनों के ताने बाने
पता नहीं होता हमको
पूरे भी होंगे ये सपने हमारे
ज़िंदगी और मौत के बीच
झूझते हुए भी
हम बुनते रहते ताना बाना
उलझे रहते हैं
अपने ही विचारों में
क्या होगा कैसे होगा
बस इन्हीं विचारों की
उधेड़ बुन में
मोह माया में फँसे हुए
जबकि मालूम है
भरोसा नहीं एक पल ज़िंदगी का
सत्य को स्वीकार नहीं पाते
हर पल एक आस में
जीते है सब मंगल होगा
ये सोच मन को ढाँढस बँधाते हैं
सत्य जानते हुए भी
अंजाना सा भय मन में लिए
जीवन की आस का
फिर बुनने लग जाते हैं ताना बाना
जाने क्यों न स्वीकार कर पाते
ज़िंदगी की इस सच्चाई को हम
क्यों घुटने टेक देते हैं
क़िस्मत के आगे
समझ नहीं पाते जाने क्यों
जो होना है
वो होकर रहेगा
इस अटल सत्य को जाने क्यों
हम आत्मसात नहीं कर पाते
ये जीवन है
ताना बाना बुनता रहता

अंतस

अंतस में फिर आज पीर उठी
जब देखा नन्ही बच्ची को

लिपटी कपड़े के बीच
काटों में पड़ी रोती
काँप उठा अंतर्मन
सिहर उठी ये देख
सोच रही मन में
बह रही अश्रुधार नैनों से
कितनी निर्दयता से छोड़ दिया
नन्ही सी जान को
ऐसी क्या मजबूरी थी
उस माँ की
जो नन्ही परी के लिए लड़ न सकी
क्यों नहीं किया विरोध उसने
बच्ची को अपना कर
माँ का फ़र्ज़ क्यों न पूरा किया
क्या थोड़ी भी ममता न जागी
क्या नहीं हुई पीर दिल में
जब नौ माह कोख में पाला
तो फेंक दिया फिर क्यों झाड़ियों में

मानव के अंतर्मन की गाथा

मेरे अंतर्मन की पीड़ा को
तुम क्या जानो बनवारी
जब दुःख के बादल छाते तुम कहाँ चले जाते बनवारी

तुम कहते हो कर्म करो
फल की इच्छा न रखो
पर क्या बिन इच्छा सब मिल जाता बताओ बनवारी

पढ़े लिखे को काम नहीं
पैसे वालों को आराम नहीं
ग़रीबी के आलम में कैसे जिए बताओ बनवारी

मानव जीवन है मिला
धर्म पथ तुम चलो
ये शिक्षा तुम देते हमको भूखे पेट भक्ति कहाँ से लाए बनवारी

सब कुछ किया हमने
क्या मिला हमें बताओ तुम
सुख दुःख के मिले जुले भाव लिए जीती है ये दुनियाँ सारी

उतार चढ़ाव

कुछ उलझनों में फँसी सोचती रही
क्या जीवन में सिर्फ़ दुःख ही दुःख है
क्यों नहीं शारीरिक सुख एक पल
क्यों नहीं चैन एक पल
क्या शरीर सिर्फ़ बीमारियों से घिरा रहेगा सदा
क्या कभी मानसिक शांति नहीं मिलेगी
जीवन के कई उतार चढ़ाव देखे
कभी हार नहीं मानी
हार जाती हूँ बस यहीं आकर
जब फिर कोई नई बीमारी घेर लेती
तब फिर सोचती हूँ
क्यों इन सबसे उबर नहीं पाती
क्यों नहीं हँसकर स्वीकार कर पाती
जब बड़े बड़े दर्द सह लिए
तो छोटी छोटी सी बातों से
क्यों घबरा जाती
क्यों न ख़ुश रहती जो ख़ुशी मिली उसी में
क्यों न उस दुःख में भी ख़ुशी तलाश कर
ख़ुश होना सीख पाती
ख़ुश होना सीख पाती
अपने अवसाद से बाहर निकल
जो है उसमें ख़ुश रहना सिख जाती

प्यास

धरती की प्यास कौन बुझाए
प्यासी धरती चीत्कार रही
कौन सुन रहा उसकी
बुझा रहा कौन क्षुधा
निर्जन वन है सूने सड़क किनारे
न पधिक़ को छाया बची
न सुरक्षित बचे वन्य प्राणी
धरती की गोद हुई सूनी
अंबर भी तरसे बरसने
कहा से लाए इतना पानी
प्यासी धरती प्यासा अंबर
प्यासे पड़े खेतख़लिहान
बूँद बूँद को तरस रहे सारे पशु पक्षी यहाँ
वृक्ष लगाओ जंगल उजड़ने से बचाओ
सुरक्षित करो वन्यप्राणी
जंगल बचेंगे हरियाली होगी चारों ओर
बरसेगा अंबर भी झमाझम
नाचेंगे बाग़ों में मोर
क्षुधा बुझेगी धरती की
पशु पक्षियों की फिर
महकेगा चंदन सब ओर

चोरी चोरी

याद आते हैं वो
बचपन के दिन
याद आती हैं
गरमियों की वो छुट्टियाँ
माँ के हाथ का अचार वो मुरब्बा
मीठी आम की अचारी
माँ के सोते ही छत पर जाना
चोरी चोरी उसे खाना
बहुत याद आता है
इस छत से उस छत
कूद कर जाना
सबके घर के
अचार मुरब्बे चुरा के खाना
बड़ा अच्छा लगता था
चुपके चुपके खाना
फिर माँ की वो डाँट
और फिर इधर उधर भाग जाना
बहुत याद आती हैं
वो बचपन की बात
वो भी क्या दिन थे
न चिंता न फ़िकर होती थी
न था इतना पढ़ाई का बोझ
थी तो बस मस्ती भरी ज़िंदगी
न आज बच्चों के पास समय रहा
न वो बचपन ही
बढ़ गया बस्तों का बोझ
छिन गया बचपन
न पहले जैसा
गुड्डे गुड़ियों का खेल रहा
न चोरी छिपे
अचारी खाने का वक़्त
समय के साथ सब बदल गया
देसी खाने की जगह
पिज़्ज़ा बर्गर ने ले ली
जाने कहाँ खो गया
नन्हें मुन्नों का बचपन
याद आता है वो
अपना वो प्यारा बचपन

कहा-सुना

अपनी प्यारी देवरानी रीना को समर्पित

कुछ कहा नहीं कुछ सुना नहीं
चली गई तुम हमसे इतनी दूर

कुछ तो कहती सुनती हमसे
मन की पीर तुम कहती हमसे

इतनी जल्दी क्या थी तुमको
साथ न क्या भाया हमारा तुमको

कैसे रहेंगे हम तुम बिन ये न सोचा
बच्चों का भी एक पल न तुमने सोचा

छोड़ गई मझदार सबको यूँ रोता
देखो हाहाकार मचा सारा परिवार रोता

याद तुम्हारी बहुत आएगी रीना
हर एक पल मुश्किल होगा जीना
जो कहा-सुना वो माफ़ करना
हम सबको तुम हिम्मत देना

भूल न पाएँगे कभी हम वो पल
जो बिताए हमने ख़ुशियों के पल

वो सर्द दुपहरी बहुत याद आएगी
जब बेर बिही हम खाते थे संग संग

हर सुख दुःख की तुम साथी थी
हर पीर मेरी तुम जान जाती थीं

तुम बिन सूना सूना लगता है ये घर आँगन
तुम बिन लगती अधूरी है बहुओं की महफ़िल

हमसे क्या अपराध हुआ जो छोड़ चली हमको
रोती अँखियाँ सबकी निशदिन याद कर तुमको

गति

वक़्त अपनी रफ़्तार से
चलता रहा
कभी सफलताएँ
तो कभी असफलता
हाथ लगी पर
मैं घबराई नहीं
क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ
अपने कर्तव्यों का निर्वहन
बख़ूबी करती रही
कई परीक्षाएँ दीं है मैंने
अपने इस जीवन में
हार मानना कभी सीखा नहीं
क्योंकि
हारना मेरी फ़ितरत नहीं
चुनौतियों का सामना
डट कर किया
हर परिस्थिति
हर हाल में ख़ुश रही
स्त्री हूँ मगर बेचारी नहीं
मेरा भी वजूद है
मैं अपने आप में सम्पूर्ण हूँ
मुझसे सारा संसार है
समय का पहिया घूमता रहेगा
मैं भी उसके साथ
उसी गति से चलती रहूँगी
अपने परिवार और
बच्चों को साथ लिए
इनके इर्द गिर्द रहते हुए
बिना किसी शर्त
मैं अपनी ज़िंदगी इन पर
न्योछावर का दूँगी
क्योंकि इनसे मेरी ज़िंदगी है
मेरी ज़िंदगी की डोर
अपने परिवार से बंधी है
वक़्त भले ही बदल जाए
पर मैं कभी न बदलूँगी
क्योंकि मुझे
वक़्त के साथ चलना आता है
या ये कहूँ कि
मैंने वक़्त के साथ चलना सीख
लिया है
शायद इसलिए मैंने हर हाल में
हर परिस्थिति में ख़ुश रहना,.

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अदिति रुसिया
जन्म - 16.04.1972
शिक्षा - बी.ए. (पं. रविशंकर युनिवर्सिटी)
माता - श्रीमती मंजुला गुप्ता
पिता - स्व.श्री सतीशचंद्र गुप्ता
पति - श्री संजय रुसिया
पुत्र-पुत्री - कार्तिक एवं कावेरी
कार्यक्षेत्र - स्वतंत्र लेखन।
दायित्व - राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य - मातृभाषा उन्नयन संस्थान।
सलाहकार- अंतरा शब्द शक्ति (मासिक वेब पत्रिका)
प्रकाशन - जीवन की धूप छाँव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा संकलन), पीर धरा की (काव्य संग्रह), वुमन आवाज (नारी से नारी तक), रिश्तों की धरोहर (कथा संग्रह)
अंतरा शब्द शक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा में अनेक रचनाएं प्रकाशित।
सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान2018, भाषा सारथी सम्मान, अंतरा गौरव सम्मान वुमन आवाज़ अवार्ड 2018 , अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2019। मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-029-2
मूल्य- 60/-